Research Journal of Language, Literature and Humanities _____E-ISSN 2348-6252
Vol. **8(2),** 32-36, May **(2021)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

भारतीय संगीत में नवपरिवर्तन, अविष्कार और औद्योगीकरण

सुनिल बाबुलालजी पटके
डिपार्टमेंट ऑफ़ म्यूजिक, आर्ट्स कॉलेज मलकापुर, अकोला, महाराष्ट्र, भारत
patake.sunil@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 30th September 2020, revised 30th Januray 2021, accepted 20th February 2021

शोध सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत में नवपरिवर्तन अमीर खुसरो से शुरू होता है । जिसे शास्त्रीय संगीत कहा जाता है, उसका जन्म लोक संगीत में हुआ था। इस प्रसंग में स्वरों के नामकरण सप्तक में षड्ज और ऋषभ, पंचम और धैवत की स्थिति का इतिहास रोचक है। भारतीय साहित्य में श्रुतियों से स्वर का संबंध और स्वर से स्थान का संबंध सैद्धांतिक दृष्टि से विचारणीय है। नवपरिवर्तन और अविष्कार के दृष्टि से देखा जाए तो, विभिन्न देशों के लोक संगीत में समानता से यह भी सिद्ध होता है कि इन देशों के निवासियों में लंबे समय से पारस्परिक संबंध रहा है। आचार्य बृहस्पति के एक लेख में "हंगरी रूस और मंगोलिया के संगीत पर भारतीय संगीत का प्रभाव दिखाई देता है। भारतीय संगीत के उत्कर्ष के लिए यह परमावश्यक है, कि शास्त्रीय अर्थात तर्कशुद्ध एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का आश्रय लेकर अपने संगीत में पुन: प्राण -प्रतिष्ठा करें -आचार्य बृहस्पति। भारतीय संगीत और साहित्य यह मानव के विकास के दो अविभाज्य घटक है, दोनों का उगम मानव के जन्म के साथ ही है। मनुष्य ने अपनी भाव-भावनाएं स्वरों द्वारा प्रथम व्यक्त की है। भारतीय संगीत यह आधुनिक काल में एक उपजीविका का आधार और आधुनिक औद्योगीकरण के साधनों के साथ, भारतीय शास्त्रीय संगीत का दर्जा और अखंडता को कायम रखते हुए व्यवसाय के रूप में प्रस्तुत हो रहा है। भारतीय संगीत में नवपरिवर्तन को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, प्राचीन काल से भारतीय संगीत का इतिहास देखा जाए तो, संगीत में प्राचीन काल में तीनो स्वरों से (उदात अनुदान और स्वरित) शुरुआत होकर आज आधुनिक काल में सात (सप्तसुर) पर आकर रुकी है। आधुनिक काल के संगीतज्ञ संगीत में नये-नये परिवर्तन कर, नए अविष्कार की निर्मिती कर रहे हैं। इन अविष्कारों से नये-नये वाद्यों की, नये-नये नृत्य प्रकारों की और नये-नये गायन के मिश्रित (फ्यूजन) प्रकारों की निर्मित हो रही है, इन नए प्रकारों ने वाद्य निर्मिती उद्योग और संगीत, नृत्य और वाद्य वादन क्लासेस के रूप में उभर रहे हैं।

शब्द कुंजियां: सांगीतिक नवपरिवर्तन, नये - नये आयाम, उपजीविका का माध्यम संगीत।

प्रस्तावना

भारत की सभ्यता और संस्कृति उसकी अपनी है, यह बाहर से नहीं आई किंतु सभ्यता और संस्कृति की संपूर्ण उपादान विकास-क्रम में नवपरिवर्तन के पक्ष का अनुसरण करते हुए ही पृथ्वी के वृक्ष पर भिन्न-भिन्न रूपों में रुपायीत हुए हैं और आज भी यह विकास-क्रम नवपरिवर्तन और अविष्कार निषाद गति से चल रहा है। इस विकासधारा (नवपरिवर्तन) के व्यक्तिकरण को ही हम शास्त्रीय भाषा में 'अभिव्यक्ति' कहते हैं। प्रागैतिहासिक युग से लेकर आजतक मानव-समाज जिन-जिन परिवर्तनों से गुजरा है, उनके पीछे क्रमांभिव्यक्ति की मर्मकक्षा ही छिपी हुई है।

संशोधन की आवश्यकता

भारतीय संगीत यह विश्व प्रागौतिहासिक कला है, यह संगीत कला आज के नवीनतम आधुनिक युग के आधुनिक रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, यदि संगीत कला ने आधुनिकता को आत्मसाद नहीं किया तो यह संगीत कला खत्म

होने में देर नहीं लगेगी। संगीत के गायन, वादन और नृत्य के प्रकारों में नवपरिवर्तन के पर्याय खोजना आज के आधुनिक युग में आवश्यक है, और संगीत का नवपरिवर्तित रूप का प्रचार और प्रसार करना आवश्यक है। भारतीय संगीत में नवपरिवर्तन का प्रयत्न करने से नए-नए आविष्कार सामने आने में देर नहीं लगती और इस आधुनिक आविष्कार को औद्योगीकरण का साथ मिला तो भारतीय संगीत संपूर्ण विश्व में नए आयाम के साथ प्रस्तुत हो सकता है, इसलिए भारतीय संगीत में नवपरिवर्तित आविष्कार और औद्योगीकरण इस दृष्टि से संशोधन करने की आवश्यकता संशोधनकर्ता को महसूस होती है।

संशोधन का उद्देश और उपयोगिता

प्रस्तुत संशोधन यहँ "भारतीय संगीत में नवपरिवर्तन, अविष्कार और औद्योगीकरण" इस विषय पर आधारित है। प्रस्तुत संशोधन का मुख्य उद्देश्य संपूर्ण विश्व की आधुनिक युवा पीढ़ी, संगीत साधना, गायक, संगीतकार, अध्यापक, अध्ययनकरता को आधुनिकीकरण की आवश्यकता के अनुसार भारतीय संगीत का नव परिवर्तित और आविष्कारिक रूप की आवश्यकता और कुर्ता करना है। भारतीय संगीत से संबंधित नए-नए औद्योगिकरण के क्षेत्र की जानकारी पहुंचाना यह प्रस्तुत संशोधन का उद्देश्य और उपयोगिता हैं। संगीत के गायन, वादन और नृत्य के क्षेत्र में संगीतकार, वादक और नर्तक के अलावा इंजीनियर, डॉक्टर और संशोधक आदी को भारतीय संगीत के संशोधन, आविष्कार और औद्योगिकरन इस क्षेत्र में कार्य कर करके, आविष्कारीक और परिवर्तित रूप को आधुनिक युग में प्रस्तुत करना यह है, इससे भारतीय संगीत के प्रचार और प्रसार में सहायता मिलेगी और अध्ययन करता को इसका उपयोग होगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध निबंध यहँ "भारतीय संगीत में नवपरिवर्तन, अविष्कार और औद्योगीकरण" इस विषय पर आधारित है। यहँ विषय सामाजिक संशोधन, आधुनिक संशोधन और ऐतिहासिक संशोधन पध्दतीपर आधारित है। प्रस्तुत शोध निबंध में भारतीय संगीत की पुस्तके, प्रत्रिकाये, संगीत अंक और इंटरनेट से प्राप्त लिखित साहित्य का यथोचित प्रयोग किया गया है।

संगीत वाद्यों में नवपरिवर्तन और अविष्कार

सभ्यता और संस्कृति की संपूर्ण उपादान विकास-क्रम में नवपरिवर्तन के पक्ष का अनुसरण करते हुए ही पृथ्वी के वृक्ष पर भिन्न-भिन्न रूपों में रुपायीत हुए हैं और आज भी यह विकास-क्रम नवपरिवर्तन और अविष्कार निषाद गति से चल रहा है।[१] मनुष्य ने अपनी भाव-भावनाएं स्वरों द्वारा प्रथम व्यक्त की है। भारतीय संगीत यह आधुनिक काल में एक उपजीविका का आधार और आधुनिक औद्योगीकरण के साधनों के साथ, भारतीय शास्त्रीय संगीत का दर्जा और अखंडता को कायम रखते हुए व्यवसाय के रूप में प्रस्तुत हो रहा है।[2] आज हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के मामले में संसार के अन्य उन्नत देशों से चाहे कितना ही पीछे हो किंतु जिन दो विषयों में सारा संसार भारत के आगे नतमस्तक है, उनमें एक है हमारी आध्यात्मिक परंपरा और दूसरा हमारी सांगीतिक परंपरा। वादन का संबंध धर्म से तथा देवी-देवताओं से प्राचीन काल से प्रस्थापित किया गया है। माँ सरस्वती के हाथों में विणा विराजित है, भगवान शंकर को डमरू प्रिय है, भगवान विष्णु के हाथों में शंख दिखाई देता है, कृष्ण कन्हैया की मुरली (बन्सी) ने तो सभी को गोपगोपियों को पागल कर दिया था। हमारी वादन कला को उतना ही धार्मिक महत्व दिया गया है, जितना कण्ठसंगीत को तथा नृत्य को दिया गया है।[3] वादयों के संबंध में कहा गया है -

"तत् वाद्य तु देवाना गंधरवानाच शोषिरम।
आनंद राक्षसानातू, किन्नराणा घन विदु :।[3]

अर्थात तत् वाद्य देवताओं से, सुषिर वाद्य गन्धर्वो से और अवनद्य वाद्य राक्षसों से तथा घन वाद्य किन्नरों से संबंधित थे। वैज्ञानिक दृष्टि से वाद्यों की उत्पत्ति के संबंध में आधुनिक विद्वानों के विचारों पर निर्भर रहना अधिक उचित होगा। वाद्यों के निर्माण में कदाचित विभिन्न प्राकृतिक ध्वनियों सबसे अधिक प्रेरक सिद्ध हुइ होगी। जब इन वाद्यों को प्रयोग में लाया गया तो इन्हीं वादों के आधारपर नये-नये वाद्यों का जन्म और विकास समय-समय पर होता रहा। इनके लिए दो बातें उत्तरदायी थी, पहली तो यह कि समय के साथ अनेक वाद्यों के स्वरूप में परिवर्तन हुए जिन्हें कुछ समयतक बजाया गया तो उनके कुछ दोष द्विगुणित हुए। उन दोषों को दूर करने के लिए उनके स्वरूप में आवश्यक संशोधन या नवपरिवर्तन किए गये और इस प्रकार कुछ नए वाद्य बन गये। इन कारणों के अतिरिक्त एक कारण और भी है,

वह मानव मस्तिष्क की सतत गतिशीलता जिसके कारण वह सदा ही कुछ न कुछ नवीनता खोजता रहता है, तथा प्रयोग करता रहा है। इस प्रवृत्तिने भी कई वाद्यों की उत्पत्ति में तथा विकास योगदान दिया यह प्रवास प्राचीन काल के शंख, दुंदुभी, भेरी, वीणा (त्रितंत्री विणा, नवतंत्री विणा, शततंत्री विणा, मात्तकोकीला विणा), मुरली (बांसुरी), नगाड़ा, चौघडा, सूरसिंगार, सितार, स्वरमंडल, संतूर, तबला, मृदंग, शहनाई, व्हायोलिन, सारंगी, तानपुरा इसराज, दिलरुबा, हार्मोनियम, क्लारिओनेट, सरोज, मोहनविणा, गिटार संगीत में विदेशी वाद्यों का भी उपयोग नवपरिवर्तन के रूप में होने लगा।[३] इसमें ऍकॉवाडरीयन, व्हायोलिन, व्हायोला सेलो ओबो फ्रेण्यहॉर्न ट्रोम्बोन ड्रम, आदि वाद्यों का भारतीय वाद्यों के उपयोग होने लगे।वैदिक काल से लेकर अब तक अवनद्य वाद्यों का क्रमिक विकास होता आया है और आधुनिक युग में तबले का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान हैं।[४]

भारतीय पारंपरिक पद्धति में नवपरिवर्तन और अविष्कार

कला का प्राण आविष्कार है, अनुकरण-मात्र नहीं, और यह अविष्कार संगीत कला के क्षेत्र में सबसे कठिन है। साहित्य तथा चित्र-कला के क्षेत्र में तो अनुकरण से एक पल भी काम नहीं चलता इन, दोनों कलाओं के क्षेत्र में तो मौलिकताहिन व्यक्ति का कोई महत्व ही नहीं माना जाता। भाव या शैली के संबंध में, जो कलाकार साहित्य या चित्रकला के क्षेत्र में अपने किसी पूर्ववर्ती कलाकार का अनुकरण करता है, वह प्रायः तत्काल तिरस्कृत कर दिया जाता है। अतः उक्त दोनों कलाओं के क्षेत्र में मौलिक अविष्कारों की प्रवृत्ति अत्यंत स्वाभाविक है। किंतु संगीत के क्षेत्र में सफल अनुकरण करनेवाले कलाकार भी काफी अभिनंदित होते हैं। संगीत-कला के क्षेत्र में मौलिक अविष्कार प्रारंभिक यूग ही में अधिक मात्रा में किए गए थे, प्रत्येक युग में नहीं। बहुत थोड़े संगीतज्ञ ऐसे होते हैं, जो नए स्वरो, नए रागों और नई रागिनीयों के आविष्कार कर सकें, नए वाद्य यंत्रों का आविष्कार करने वाले भी बहुत कम लोग होते हैं। विणा, स्वरतार (सितार), स्वरंगिणी (सारंगी), स्वरोदय (सरोज) जैसे वाद्यों के अविष्कार बार-बार नहीं होती। भारतीय वाद्य यंत्रों की परंपरागत दो-तीन शताब्दियों से बड़ी धीमीगति से आगे बढ़ी हैं और शायद यही कारण है, कि भारतीय समवेत वाद्य-संगीत (आर्केस्ट्रा) अभी तक कोई सर्वमान्य और विशिष्ट रूप नहीं ले सका है। भारत के मौखिक संगीत में जैसे स्वर-सामंजस्य का अभाव है, वैसे ही वाद्य-यंत्रों द्वारा ध्वनिसमन्वय का परिवेषण भी अत्यंत कठिन है। इन दोनों दिशाओं में अब हो रहा है। भारत में ऑर्केस्ट्रा-संगीत का विकास थोड़ा-बहुत फिल्म और आकाशवाणी द्वारा हुआ है।[१]

संगीत में नई संभावनाएं और औद्योगिकरण

वैज्ञानिक उपकरणों, माइक्रोफोन, धन्याकन पद्धति रिकॉर्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग आदि से संगीत की न केवल अनेक परंपरागत मान्यताये बदली है बल्कि प्रायोगात्मक संगीत की अनेक नई दिशाएं सामने आई है। माइक्रोफोन के बाद पूरी दूरी तक सुनाई देने वाली पाटदार आवाज का महत्व घट गया है। इससे प्रायः गला फट जाता था। अब एक ओर कण्ठ संस्कार की वैज्ञानिक शिक्षा दी जा रही है, दूसरी और कण्ठ माधुर्य, दोपरहित स्वर की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक हो गया है क्योंकि माइक्रोफोन, ध्वनि रिकॉर्डिंग मात्र ध्वनि विस्तारक होने के साथ कलाकार का दर्पण भी है जो उसके गायन वादन के दोषो बारीकियों को उजागर करके श्रोताओं तक तुरन्त पहुंचा देता है।[५] जीवन के अनेक क्षेत्र में संगीत की विशेषताओं का व्यापक रूप सामने आया हैं। विज्ञापन संगीत एवं धुनें, पार्श्व संगीत, फिल्मी संगीत, संगीत निर्देशन, संगीत फीचर, संगीत नाटिका, ऑपेरा, वाद्यवृंद, समूहगान, संगीत, प्रेक्षाग्रह तथा रिकॉर्डिंग स्टूडियो तथा रिकॉर्डिंग प्राविधिक अभियांत्रिकी एवं तकनीक, दूरदर्शन, आकाशवाणी, उचानुशीलन, संगीत शास्त्र के रूप में संगीत की नयी संभावनाएं सामने आ रही है।[५] संगीत सुनने, सीखने, सुरक्षित रखने की तकनीक में बड़ा सुधार हुआ है सुविधाएं सुलभ हो गयी है।

नये परिवेश नयी संभावनाओं के कारण भारतीय संगीत अनेकानेक विशेषताओं से समृद्ध होता जाएगा। अपनी अनूठी विशेषताओं के कारण भारतीय संगीत न केवल अद्वितीय बल्कि शाश्वत रहेगा।[५] बीसवीं शताब्दी के सौंदर्य विषयक चिंतन और ललित्यशास्त्र सम्बन्धी स्थापनाओं की सबसे प्रमुख उपलब्धि यह है की इस शताब्दी में सौंदर्य दार्शनिक उहापोह या बौद्धिक गवेषणा का विषय न होकर सामाजिक महत्व का विषय बन जाता हैं।[६]

संगीत पर नये अविष्कार और औद्योगिकरण का अच्छा-बुरा प्रभाव

व्यापारिक पूंजीवाद के अभ्युदयकाल में चित्रकला, शिल्पकला, वास्तुकला की उपलब्धियां चमत्कारी थी। मशीनी उद्योग के चलन से वस्तुओं का उत्पादन तो बढ़ा पर कलात्मक सुंदर कृतियों का उत्पादन घट गया। 19 वी सदी के मध्य तक लोग अधिकतर समयकालीन संगीत ही सुनते थे; उसके बाद जांज़ और पॉप संगीत छोड़कर लोग मृत कलाकारों का संगीत ही सुनते हैं।[3] संगीत के विकास को पहला धक्का लोहे कोयले वाली औद्योगिक क्रांति से लगा दूसरा धक्का महाजनी पूंजीवाद के युग में विद्युतसंचालित प्रौद्योगिकी से लगा। इस प्रौद्योगिकी से एक ही लाभ हुआ, बड़े पैमाने पर पुराने संगीतकारों की रचनाएं जनसाधारण को सुलभ हुई, विशेष रुप से दूसरों महायुद्ध के बाद। इन पुराने संगीतकारों के अलावा और उसके साथ जिन आधुनिक कलाकारों की रचनाएं सुनी जाती रही हैं, वे सोवियत संघ के थे। आधुनिक संगीत के नाम पर पूंजीवादी संसार जनता को जांज और पॉप संगीत ही दे सका है। उत्पादन में विकास के साथ क्या उसी गति से कला का विकास होता है? कला अपने सामाजिक आधार से कभी विलग नहीं होती पर यह संबंध पेचीदा होता है। व्यापारीक पूंजीवाद ने सामन्ति अलगाव कम किया, जातीय चेतना जगाई और यह चेतना, ज्ञान तथा अज्ञात रूपों में, कलात्मक सृजनशीलता की महान प्रेरणा बनी । औद्योगिक प्रगति के साथ वर्गसंबंध कठोर हुए, सृजनशीलता की प्रेरणा क्षीण हुई। दोनों ही स्थितियों में सामाजिक आधार से कला का संबंध बना रहा, किन्तु परिणाम भिन्न थे। हेंड्री और बाशर्म का कहना हैं: "19 वीं सदी से लगातार बाद तक जैसे उच्च कोटि के पुराने संगीत का अधिकाधिक पता चला, वैसे वैसे यह विश्वास करना कम संभव होता गया कि कला में विकास प्रक्रिया चालू है और समकालीन संगीत पहले के संगीत से अनिवार्यता अच्छा है।"[3] औद्योगिक क्रांति के बाद वाद्ययंत्रों में बहुत 'सुधार' हुआ। रिनैसेन्सकाल का एक लोकप्रिय तारवाद्य ल्यूट था। इसमें इतना सुधार हुआ कि उसका माधुर्य नष्ट हो गया और कलाकारों ने उसे बजाना बंद कर दिया। पियानो का पूर्वाभास देनेवाला एक वाद्यतंत्र हाप्सिकॉर्ड था। इससे भी 'सुधार' हुआ और नतीजा वही निकला, लोगों ने इसे बजाना बंद कर दिया। बाख जिस तरह का ऑर्गन बजाते थे, उसे भी 'सुधारा' गया पर विशेषज्ञों ने उबकर पुराने ढंग के ऑर्गन को फिर से चालू किया। ढाका की मलमल जीन करघों पर तैयार की जाती थी, वे चाहे जितने पुरानपन्थी हो, मशीनों से बना कपड़ा उसका मुकाबला न कर सकता था। यह बात वाद्ययंत्रों के लिए भी सच है।[3]

उपसंहार

भारतीय संगीत लोक जीवन से अभिन्न रूप से जुड़ा रहा। जीवन के छोटे से छोटे प्रसंग की ललिततम अभिव्यक्ति की परम्परा लोक संगीत में रही है और वह निरंतर उच्च संगीत को प्रभावित करती रही है। प्राचीन ऋषि कोरे चिंतक या आदर्शवादी नहीं थे। उन्होंने जीवन जिया, देखा और उसी में परम् सत्य को पाया। जरुरत इस बात है की हम उन ऋषियों और उनके द्वारा दिए गए शिद्धान्तो पर पूर्ण श्रद्धा रखकर सोचे , पद्धतियो के संकुचित दायरे से बाहर निकलकर, पूर्वाग्रहों को छोड़कर निष्पक्ष तथा स्वतंत्र बुद्धि से घरानों व परम्पराओ के मोह से मुक्त होकर विचार करें और जैसा अनुभव में आए, उसे निःसंकोच होकर व्यक्त करे।[७] भारतीय संगीत में नवपरिवर्तन, अविष्कार और औद्योगीकरण इस दृष्टी से पं. सुधीर माईणकरजी के अधिक उपयोगी हो सकते है पंडितजी कहते है की" प्रात्याक्षिकासह व्याख्यान कार्यशाळाचा उद्देश करण्यावर आहे, क्रियांवर आहे, रियाजवर आहे. अभ्यासातले काही विषय बौद्धिक शिक्षणाचे असतात, हे बौद्धिक शिक्षण जर विद्यार्थ्यांना अपुरे मिळत असेल तर, त्याच्याकरिता अशाच बाहेरच्या त्या विषयातील तज्ञ् असलेल्या ज्ञानी गुरूकडून विद्यार्थ्यांना प्राप्त करून द्यावे, म्हणजेच अशा तज्ञांची व्याख्याने आयोजित करावी. हि अभ्यास सत्रे प्रात्यक्षिकासह व्याख्यानाच्या स्वरूपात असावी यामध्ये विद्यार्थ्यांना प्रश्न उत्तराच्या स्वरूपात ज्ञान प्राप्त करून घेण्यासाठी मुभा असावी, विद्यार्थ्यांना उत्तेजन दिले जावे."[८] आधुनिक काल के संगीतज्ञ संगीत में नये-नये परिवर्तन कर, नए अविष्कार की निर्मिती कर रहे हैं। इन अविष्कारों से नये-नये वाद्यों की, नये-नये नृत्य प्रकारों की और नये-नये गायन के मिश्रित (फ्यूजन) प्रकारों की निर्मित हो रही है, इन नए प्रकारों ने वाद्य निर्मिती उद्योग और संगीत, नृत्य और वाद्य वादन क्लासेस के रूप में उभर रहे हैं। आधुनिक काल के संगीतज्ञ संगीत में नये-नये परिवर्तन से ही संगीत-शिक्षण में सफलता नहीं होती अपितु अभ्यास विधि के ज्ञान से सफलता मिलती है। जिस साधक को अभ्यास विधि का सम्यक ज्ञान होता है वह कम-से-कम समय और परिश्रम में अधिक-से-अधिक रागो और टालो का अभ्यास कर लेता है। अभ्यास विधि के ज्ञान संगीत की शिक्षा सरल

सुगम हो जाती है अतएव संगीत के अभ्यास-विधि का ज्ञान आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। संगीत में नये नवपरिवर्तन, अविष्कार और औद्योगीकरण का अच्छा-बुरा दोनों प्रकारो से प्रभाव होता है, इस लिये संगीत साधक, संगीतज्ञ, संगीत शिक्षक और विद्यर्थियो को नवपरिवर्तन, अविष्कार और औद्योगीकरण का उपयोग करते समय अपनी भारत की उत्कृष्ट संगीत परम्परा सुरक्षित रखिते हुए नवपरिवर्तन, अविष्कार और औद्योगीकरण का यथोचित उपयोग करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. गर्ग लक्ष्मीनारायण (२००६). *संगीत निबन्धावली.* षस्टम आवृत्ति, संगीत कार्यालय हाथरस, इंडिया, 45-52. ISSN: 0970-7824.
2. शर्मा रामविलास (२०१०). *संगीत का इतिहास और भारतीय नवजागरण कसी समस्याएँ.* प्रथम संस्क्रण, वाणी प्रकाशन– दिल्ली, इंडिया, 45-52. ISSN: 0970-7824.
3. देशपांडे पं. स. भ. (२००७). *संगीत अलंकार.* प्रथम संस्करण, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन मिराज, इंडिया, pp 1-159 ISSN: 0036-4320.
4. पाठक पण्डित और जगदीश नारायण (२००४). *संगीत निबन्ध माला.* संशोधित संस्करण, पाठक पब्लिकेशन प्रकाशन, इलाहबाद, इंडिया, pp 1-142.
5. श्रीवास्तव हरिश्चंद्र (१९६२). *संगीत निबंध संग्रह.* प्रथम संस्करण जुलाई संगीत सदन प्रकाशन- इलाहाबाद, इंडिया, pp 19 ISSN: 0970-7824.
6. वाजपेयी सुनृत कुमार (१९९६). *पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र का इतिहास.* नमन प्रकाशन-नई दिल्ली, इंडिया, pp 331 ISBN: 81-8129-078-X.
7. चौधरी सुभद्रा (२०२०). ख्याल के विकास की पृष्ठभूमि और ख्याल- शैली के पुनरुत्थान के उपाय. नमन प्रकाशन -नई दिल्ली, इंडिया, pp 1-130.
8. माईणकर पंडित सुधीर (२०२०). संगीत कला विहार' २०२०- संगीतातील विचारधन-९ संगीताचे शिक्षण', प्रकाशन- संगीत कार्यालय हाथरस, इंडिया, pp 7-9 ISBN: 0036-4320.